Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 1, April-2017, ISSN 2230-7540

ग्रामीण व शहरी छात्र छात्राओं के शिक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

Salma Khatoon[1]* Dr. Ramesh Kumar[2]

[1] Research Scholar, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan

[2] Director, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan

सार – ***शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा मनुष्य को ऐसा परिवेश प्रदान करती है जहां व्यक्ति का निरंतर सर्वोतोन्मुखी विकास होता है। छात्र के सर्वतोन्मुखी विकास के उत्तरदायित्व में शिक्षक की अहम भूमिका है। जिसके फलस्वरूप शिक्षण संस्थानों का उत्तरदायित्व है कि वह अध्यापकों को सुनियोजित एवं सुगठित प्रशिक्षण प्रदान करें जिससे वह भी अपने छात्रो के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे। शैक्षिक लब्धि मनुष्य के सर्वांगीण विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है***

आजादी के बाद भारतीय शिक्षा में सुधार व स्तरीकरण हेतु अनेक आयोगो तथा समितियों का केन्द्रीय स्तर पर गठन किया गया। अनेक आयोगो तथा समितियों ने शिक्षा की समस्याओं की समीक्षा की व राष्ट्रीय नीतियाँ तैयार की। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948-1949, माध्यमिक शिक्षा 1952-53 व शिक्षा आयोग 1964-66 का गठन किया गया। कोठारी आयोग ने 1951-56 के दौरान शिक्षा में हुई प्रगति की समीक्षा की व इसमें सुधार की आवश्यकता स्पष्ट करते हुये अपने सुझाव प्रस्तुत किये। इन सिफारिशों और प्रयासों के आधार पर 1968 में एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्वीकार की गयी। सभी स्तरों पर शैक्षिक सुविधाओं का प्रसार शुरू हुआ व शिक्षा को मनोवैज्ञानिक आधार पर केन्द्रित करने का कार्य आरम्भ हुआ। क्योंकि बालक का व्यक्तित्व प्राकृतिक व भौतिक वातावरण का समावेश होता है अतः वर्तमान में मनौवैज्ञानिकों ने बालक के असीम जिज्ञासा भरे औजस्वी मस्तिश्क को ततृप्त और विकसित करने हेतु स्वस्थ व शैक्षिक पारिवारिक, सामाजिक वातावरण को आवश्यक माना है।

----------X----------

प्रस्तावना

आज का युग आधुनिक तथा अति प्रतिस्पर्धात्मक है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति के पास गुणों तथा योग्यताओं का असीमित भंडार है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में कोई विशेष गुण अथवा प्रतिभा रखता है तथा साथ ही यह सर्वविदित है, कि विश्व में प्रत्येक व्यक्ति बौद्धिक व्यक्तित्व तथा मनोवैज्ञानिक गुणों में एक दूसरे से भिन्न होता हे। यह योग्यताएं तथा गुण मानव संसाधन के रूप में किसी न किसी तरह से समाज में पहुँचती है तथा उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिकायें निभाती है। प्रत्येक व्यक्ति एक स्वतंत्र अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है, जिसमें छात्र जीवन सर्वा धिक गतिशील रहता हे। व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं व गुणों के संबंध में उसी अभिव ृत्ति निर्णयों व मूल्यों का योग आत्म प्रत्यय कहलाता है,। छात्र जीवन में आत्म संप्रत्यय महत्वपूर्ण स्थान रखता हे, जो उसकी बहुत सी क्षमताओं का निर्धारण करता है तथा व्यक्तितव का निर्माण होता है। बालक के आत्म संप्रत्यय कें विकास में विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हे। सामान्यतः बालक और बालिकाओं के आत्म संप्रत्यय में अंतर पाया जाता है लिंगानुसार भूमिकाओ का प्रभाव आत्म संप्रत्यय पर देखा जा सकता है सामान्यतः उच्च सामाजिक आर्थि क स्तर वाले बालक/बालिकाओं का आत्म संप्रत्यय उच्च होता है। धर्म ओर सामाजिक वर्ग का प्रभाव आत्म संप्रत्यय पर पड़ता है,। संस्कृति की विभिन्नताओ का प्रभाव आत्म संप्रत्यय पर देख जा सकता है, (धवन एवं नायडू, 1995)। व्यक्तियों में आत्म-स्वीकृति अधिकता व्यक्तिगत समायोजन शीलता को मज़बूती प्रदान करती हे (मेरिस, 1958)। जीवन के प्रारभिंक वर्षो में आत्म संप्रत्यय अस्थिर देखी जा सकती परंतु आयु बढ ने के साथ-साथ उसमें स्थिरता आती है आत्म संप्रत्यय मे अस्थिरता, विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन

www.ignited.in

मे दुर्बलता प्रदान करती है। व्यक्ति के आत्म संप्रत्यय की शुद्धता (।बबनतंबल) उसके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन को सार्थक रुप से प्रभावित करती है। आत्म संप्रत्यय व्यक्ति के विचारों और अनुभव से परिवर्तित होते रहते है, अतः आत्म संप्रत्यय भी परिवर्तित होता रहता है जब व्यक्ति की उपलब्धि और उसके लक्ष्य में अंतर अधिक होता है तब उसका आत्म संप्रत्यय ऋणात्मक रूप से प्रभावित होता है,। व्यक्ति जितना ही कम आक्रामक होता है, उसका आत्म संप्रत्यय उतना ही अधिक उच्च होता है,। किशोरों के आत्म संप्रत्यय को कुण्ठा तथा कुण्ठा कें विभिन्न मोड्स महत्वपूर्ण

शिक्षा मनुष्य के जीवनपर्यंत चलने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा कोई समाज अपने सदस्यों को अपनी पूर्व संचित सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराता है और उन्हें इस योग्य बनाता है कि वे अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरंतर विकास कर सकें। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है। इसके माध्यम से विद्यालयों मं ज्ञान कला कौशल तथा अच्छे व्यवहार का विकास किया जाता है। शिक्षा मानव की अमूल्य वस्तु है। शिक्षा समाज और मानव की आत्मा है तथा उसके विकास में सहायक है। यदि समाज मानव का दर्पण है तो मानव शिक्षा का दर्पण है। अर्थात मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने जीवन में जो वृद्धि करता है जिन जिन पहलुओं का विकास करता है वह सब शिक्षा से संभव है। शिक्षा मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। मनुष्य अपने जन्म के बाद से ही शिक्षा ग्रहण करना प्रारंभ कर देता है और शिक्षा की यह प्रक्रिया चलती रहती हैं। प्रारंभ में शिक्षा प्रदान करने का कार्य घर-परिवार एवं समुदाय कहते हैं। तत्पष्चात व्यक्ति औपाचारिक साधनों जैसे विद्यालय, महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करता है। प्रारंभ में जहां शिक्षा द्वारा बालक अपने गुरु से ज्ञान एवं सूचनाएं प्राप्त करता था, वहीं आज शिक्षा का अर्थ काफी व्यापक हो गया है। शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा मनुष्य को ऐसा परिवेश प्रदान करती है जहां व्यक्ति का निरंतर सर्वोतोन्मुखी विकास होता है।

छात्र के सर्वतोन्मुखी विकास के उत्तरदायित्व में शिक्षक की अहम भूमिका है। जिसके फलस्वरूप शिक्षण संस्थानों का उत्तरदायित्व है कि वह अध्यापकों को सुनियोजित एवं सुगठित प्रशिक्षण प्रदान करें जिससे वह भी अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे भारत में शिक्षक शिक्षा बहुत ही उपेक्षित रही यद्यपि इसका सीधा संबंध शिक्षा की गुणवत्ता से होता है। देश की वांछित प्रगति के लिए शिक्षक शिक्षा में समुचित सुधार लाना आवश्यक होता है। बच्चे के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बच्चे में व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं। यह देखा गया है कि एक ही विषय में एक जैसा अध्यापकों से शिक्षा ग्रहण करते हुए भी बालकों की स्तरें में विभिन्नता पायी गयी है। अधिगम के सैद्धांतिक रूप से स्पष्ट है कि बालक अपनी रूचि के अनुसार ही शिक्षण ग्रहण करता है। यह बात स्पष्ट है कि प्रभावी अधिगम बच्चे की रूचियों के विरूद्ध नहीं किया जा सकता है। लेकिन शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अन्य कारक भी हैं जैसे सामान्य तथा विशेष योग्यता, अध्ययन के क्षेत्र में रूचि, उसकी अध्ययन संबंधी आदतें, घरेलू तथा विद्यालय आदि का वातावरण तथा आर्थिक परिस्थितियां आदि। शैक्षिक लब्धि मनुष्य के सर्वांगीण विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अनेक कारक है परंतु शोधकर्ता के विचार में सबसे प्रभावी कारक बच्चे की रूचि है जो वह किसी अधिगम क्षेत्र में रखता है। रूचि-सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को संचालित करने वाली केंद्रीय शक्ति है एवं रूचि बच्चों को केवल सीखने में ही सहायता प्रदान नहीं करती बल्कि उनके द्रष्टिकोणों प्रवृत्तियों तथा अन्य व्यक्तित्व संबंधित विशेषताओं के निर्माण में सहायक होती है। यह छात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण को दिशा निर्देशित करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों की शैक्षिक स्तर को अध्ययन करना।

2. शहरी क्षेत्र की किशोरियों की शैक्षिक स्तर का अध्ययन करना।

सम्बन्धित साहित्य

ज्ञानी (1999) में आत्म प्रत्यय के जीवनात्मक कारको के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन किया। यह अध्ययन आगरा के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयांे के कक्षा 10 व कक्षा 12 के 1247 छात्रों के न्यादर्श पर यह अध्ययन केन्द्रित था। उपकरण के रूप में भटनागर द्वारा विकसित "मेरी धारणायें" प्रश्नावली को उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया। जिसमें निष्कर्ष निकला की भारतीय किशोरो के आत्म-प्रत्यय निर्धारण में जाति, छात्र, पीढी, पिता की शिक्षा व सामाजिक- आर्थिक तथा परिवार एक सार्थक भूमिका अदा करते है। सामान्य जाति के किशोरी में माता की शिक्षा, स्वत्व बोध निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है

जबकि अनुसुचित जाति के किशोरी के स्वत्व बोध निर्धारण में शहरीकरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं।

जेनिफर एम0 (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि अल्टरनेटिव स्कूल के छात्रांे के मध्य आत्मप्रत्यय पर आयु और लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं। कौर एवं बाबा ने 1995 में शैक्षिक निश्पत्ति के एक सम्बन्ध के रूप में बुद्धि का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में कक्षा 9 के 320 विद्यार्थियों को चुना गया व पाया गया कि बालकों और बालिकाओं कि सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि व अंग्रेजी व सामाजिक अध्ययन की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। गणित को छोड़कर उन्य सभी विषयों में बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च थी।

उपाध्याय व विक्रांत (2004) के अनुसार छात्र व छात्राओं के मध्य भावनात्मक स्थायित्व में सार्थक अन्तर पाया गया। इनके अध्ययन के अनुसार छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा अधिक भावात्मक स्थायित्व था। साथ ही छात्र छात्राओं के मध्य शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अंतर था।

पाल तथा खान (2005) ने छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अनुसन्धानकर्ता ने अध्ययन के उद्देश्य और साधनों की प्रकृति को द्रष्टिगत रखते हुए अनुसन्धान की ‘‘वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि’’ का प्रयोग किया है।

कम्पनी, एम. कम्पनी, एम.(2019) ‘‘शिक्षा में मानवीय मूल्य अवधारणा एवं अनुप्रयोग’) ‘‘शिक्षा में मानवीय मूल्य अवधारणा एवं अनुप्रयोग’’ ‘‘शिक्षा में मानवीय मूल्य अवधारणा एवं अनुप्रयोग’’ विषय पर पी.एच.डी. शोध कार्य किया और निष्कर्ष निकाला कि -मानवीय-मूल्यों के शिक्षण हेतु जो सर्वाधिक प्रयुक्त प्रविधि हो, उसे प्रत्यक्ष विधि बनाने से विद्यार्थियों में मानवीय मूल्य सहजता से विकसित होते है। अनुसंधानकर्ता ने इस संबंध में आदर्श पाठ्यक्रम बनाने का सुझाव भी अपने अध्ययन के माध्यम से दिया।

प्रिन्स (2010) ‘‘अनुसुचित जाति के छात्रो के लिंगभेद एवं सामाजिक) ‘‘अनुसुचित जाति के छात्रो के लिंगभेद एवं सामाजिक, आर्थिक आर्थिक स्तर के आधार पर आकांक्षा स्तर का अध्ययन।’’ विषय पर स्तर के आधार पर आकांक्षा स्तर का अध्ययन।’’ पी.एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और निष्कर्ष स्वरूप पाया कि अनुसूचित जाति के छात्रों को आकांक्षा स्तर अधिक था ओर छात्राओं का आकांक्षा स्तर औसत था। उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि तथा आकांक्षा स्तर में घनिष्ठ सम्बन्ध पाया गया।

आशादेवी (2019) ने ‘‘पिछड़े वर्ग से सम्बन्धित किशोर छात्राओं की बौद्धिक एवं शैक्षिक समस्याओं का अन्वेषण’’ विषय पर शोधकार्य कर यह ज्ञात किया कि ये छात्राऐं अपने स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, अध्ययन सामग्री, दूसरों के साथ मिलने-जुलने, भूलने की आदत तथा संवेगात्मक अस्थिरता से चिन्तित रहती हैं।

पाण्डे, बी. पाण्डे, बी.बी. (2019) ने - ‘‘किशोर लड़कों की समायोजन समस्याओं ने - ‘‘किशोर लड़कों की समायोजन समस्याओं तथा उनके शैक्षणिक प्रभाव का अध्ययन।’’ विषय पर पी- एच. डी. स्तरीय शोध अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि- ग्रामीण विद्यार्थियों ने भावात्मक, स्वास्थ्य तथा विद्यालयी समायोजन क्षेत्र में, उच्च अंक प्राप्त किये। शहरी विद्यार्थियों ने तुलनात्मक रूप से सौन्दर्य समायोजन क्षेत्र में अच्छे अंक प्राप्त किये। समायोजन, प्रशंसा का स्तर तथा उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया। ग्रामीण विद्यार्थी विद्यालयी समायोजन, स्वास्थ्य तथा भावात्मक क्षेत्रों में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

बासवाना, एम. बासवाना, एम. (1971) ने आत्मविश्वास का आत्म-संप्रत्यय की वैचारिक विशिष्ठता के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन’’ पी-एच.डी. स्तर पर करते हुए परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन’’ निष्कर्ष में पाया कि वे व्यक्ति जो पूर्ण परिपक्व वैचारिक दृष्टिकोण रखतें हैं उनकी सामान्य मानसिक योग्यता एवं आत्मविश्वास उच्च स्तर का पाया गया। इसके विपरीत ऐसी स्थिति के अभाव में आत्मविश्वास का स्तर निम्न देखा गया।

काजमी एस. (1972) ने किशोर बालिकाओ, के नेतृत्व गुणों के परिप्रेक्ष्य शोर बालिकाओ, के नेतृत्व गुणों के परिप्रेक्ष्य में आत्मविश्वास विषय पर पी-एच.डी. स्तर का शोध इलाहाबाद विश्वविद्यालय में किया। निष्कर्ष में प्राप्त किया कि आत्मविश्वास व नेतृत्व गुणों में सकारात्मक सह सम्बन्ध पाये गये। ग्रामीण व शहरी किशोर बालिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

शुक्ला, एस. शुक्ला, एस.पी. (2013) ने- ‘‘आगरा के डी ‘‘आगरा के डी ‘‘आगरा के डी.ई.आई. आई महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में शिक्षण अभ्यास के समय निरीक्षण एवं मूल्यांकन प्रक्रिया में आत्मविश्वास का अध्ययन’’ विषय पर एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली वित्त पोशित शोध प्रायोजना के अन्तर्गत अनुसंधान कार्य सम्पन्न किया और निष्कर्ष में पाया कि निरीक्षक, छात्राध्यापकों को विद्यालय चयन में

www.ignited.in

तथा प्रश्न निर्माण कला में मदद करते हैं जिससे छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास का स्तर उच्च पाया गया तथा सहायक सामग्री का प्रयोग करने की क्षमता में भी वृद्धि पायी गई ।

अनुसंधान की विधि:

अनुसंधानकर्ता ने प्रस्तुत शोध के लिये विधियों का अध्ययन किया है। यह कहना कठिन होगा कि उनमें से कौन सी विधि सर्वाधिक उपयुक्त है, प्रत्येक विधि में कुछ गुण तथा कमियां होती है। इसलिये यह कहना कठिन है, कि एक अनुसंधान विधि दूसरी अनुसंधान विधि से उत्कृष्ट या निकृष्ट है।

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने अध्ययन के उद्देश्य और साधनों की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुये अनुसंधान के वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (नॉर्मेटिव सर्वे मैथर्ड ऑफ़ रिसर्च) का प्रयोग किया है।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष

सारणी-1

शहरी किशोरों व किशोरियो की शैक्षिक स्तर मे कोई सार्थक अंतर नहीं है।

लिगं	मदोकी संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोर (शहरी)	50	6.5	3.94	2.60	0.05
किशोरियां (शहरी)	50	5.00	4.09		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य 2.60 है जो 0.05 पर सार्थक है। शहरी किशोरों का मध्यमान 6.5 और शहरी किशोरियों का मध्यमान 5.00 है जो कि शहरी किशोरों के मध्यमान से कम है। अतः शहरी किशोरों में शैक्षिक रूचि शहरी किशोरियों की तुलना में अधिक है। इनकी शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है। समूचित समीकरण या अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि किशोरों की शैक्षिक रूचि किशोरियों की तुलना में तकनीकी शिक्षा में अधिक है। परतुं वर्तमान समय से लड़कियों ने भी तकनीकी विषयो की पढाई पर जोर देना प्रारंभ कर दिया है और वह इस विषय को पसंद करने लगी हैं। परतुं फिर भी देखने से पता चलता है कि तकनीकी शिक्षा में लड़कों के द्वारा ज्यादा रूझान देखने को मिलता है। किशोर किशोरियों की स्तरें में पर्याप्त अंतर है। अतः परिकल्पना असत्य प्रतीत होती है।

सारणी-2

ग्रामीण किशोर व किशोरियों की शैक्षिक स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

लिगं	मदोंकी संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोर (ग्रामीण)	50	5.06	2.46	0.56	0.05
किशोरियां (ग्रामीण)	50	5ण्85	1.85		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य .56 है जो 0.05 पर सार्थक है। ग्रामीण किशोरियों का मध्यमान ग्रामीण 5.85 है और ग्रामीण किशोरों का मध्यमान 5.06 जो कि ग्रामीण किशोरियों के मध्यमान से कम है। अतः ग्रामीण किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है।

सारणी-3

शहरी किशोर ग्रामीण किशोरों की शैक्षिक स्तर में कोई अंतर नहीं है।

लिगं	मदोकी संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोर (शहरी)	50	6.5	3.94	2.50	0.05
किशोर (ग्रामीण)	50	5.06	2.46		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य 2.50 है जो 0.05 पर सार्थक है। शहरी किशोरों का मध्यमान 6.5 और ग्रामीण किशोरों का मध्यमान 5.06 है जों कि शहरी किशोरों के मध्यमान से कम है। अतः शहरी किशोरो में शैक्षिक रूचि की तुलना में समूचित समीकरण या अध्ययन करनें से स्पष्ट होता है कि शहरी किशोरों की शैक्षिक रूचि ग्रामीण किशोरों की तुलना में तकनीकी शिक्षा में अधिक है। शहरी किशोर ग्रामीण किशोरों की रूचियों मे पर्याप्त अंतर है। अतः परिकल्पना असत्य प्रतीत होती है। अधिक है। इनकी शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है।

सारणी-4

शहरी किशोरियों एवं ग्रामीण किशोरियो की शैक्षिक स्तर मे कोई सार्थक अंतर नहीं है।

लिगं	मदो की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोरियां (ग्रामीण)	50	6.5	3.94	2.50	0.05
किशोरियां (शहरी)	50	5.00	4.09		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य 2.50 है जो 0.05 पर सार्थक है। ग्रामीण किशोरियो का मध्यमान 6.5 और शहरी किशोरियों का मध्यमान 5.00 है जो कि ग्रामीण किशोरियों के मध्यमान से कम है। अतः ग्रामीण किशोरियो में शैक्षिक रूचि शहरी किशोरियों की तुलना में अधिक है। इनकी शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है। समूचित समीकरण या अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण किशोरियो की शैक्षिक रूचि शहरी किशोरियों की तुलना में तकनीकी शिक्षा में अधिक है।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य से प्राप्त उपलब्धियां इस प्रकार है-

1. शहरी छात्रों की शैक्षिक रूचि उच्च स्तर पाई गयी है। शहरी किशोरों की भांति शहरी किशोरियों पर भी उनके वातावरण का प्रभाव होता है। इनकी स्तर के निर्माण पर इनके पारिवारिक वातावरण व रहन-सहन तथा शहरीकरण का प्रभाव होता है।

2. ग्रामीण किशोरों की रूचियो पर उनके पारिवारिक कार्यों का प्रभाव ज्यादा होता है।

3. ग्रामीण परिवेश का प्रभाव वहां रहने वाले सभी व्यक्तियो पर पड़ता है। ग्रामीण किशोरियों की स्तरे पर भी ग्रामीण रहन-सहन तथा क्रिया-कलाप का व्यापक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

शहरी क्षेत्र के किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचियां विज्ञान तकनीकी और वाणिज्य आदि विषयों में अधिक होती है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के किशोर व किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धियां कृषि कला तथा गृह विज्ञान आदि विषयों में अधिक होती है। इसी प्रकार शहरी किशोर व किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि विज्ञान तकनीकी तथा वाणिज्य जैसे विषयों में कला, कृषि तथा गृह विज्ञान की अपेक्षा अधिक होती है। दसू री तरफ किशोर/किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि विज्ञान तकनीकी तथा वाणिज्य की अपेक्षा कला कृषि तथा गृह विज्ञान जैसे विषयों में ज्यादा होती है। किशोर किशोरियों की शैक्षिक रूचि का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर व्यापक रूप मे पड़ता है। शहरी किशोर व किशोरियों को शहरों में अच्छा पालन-पोषण, रहन-सहन तथा उच्च शैक्षिक सुविधाएं प्राप्त होती है। इनकी तुलना में ग्रामीण किशोर व किशोरियों को निम्न श्रेणी का रहन-सहन, पालन-पोषण तथा शैक्षिक सुविधाएं प्राप्त होती हैं। इनके जीवन क्षेत्र को संबंधित सुविधाओं का तथा वातवरण और रहन-सहन का प्रभाव इनकीं के निर्माण पर पड़ता है और यही कारण है कि शहरी किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचियां ग्रामीण किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचियों से भिन्न होती है। अनुसंधानकर्ता ने यह निष्कर्ष विभिन्न परिक्षणों के आधार पर दर्शाया है कि शहरी क्षेत्रों में रूचियों का पर्याप्त विकास होता है और उनकी रूचियां विज्ञान तकनीकी तथा वाणिज्य आदि विषयों में अधिक होती है जब की ग्रामीण क्षेत्रों में किशोर व किशोरियों कि शैक्षिक रूचि कला, कृषि तथा गृह विज्ञान जैसे विषयों में होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मगंल, डॉ. एस के - शिक्षण व अधिगम का मनोविज्ञान टंडन पब्लिशर्स, लुधियाना-2007

2. पाठक, पी.डी.-भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा-2007-08

3. शर्मा, आर.ए.-शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इंटर कॉलेज।

4. कौल, लौकश - शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली विकास पब्लिशिंग हाऊस, प्रा. लि. 2007

5. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. - शिक्षा मनोविज्ञान

6. वालिया, डॉ. जे.एस.-शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, अहम पाल पब्लिशर्स, एन.एन. 11 गोपाल

7. अवनिजा, के.के. 1995 - ए स्टडी आफ सर्टेन कोरिलेप्स आफ सेल्फ कानसेप्ट एमंग

www.ignited.in

स्टूडेनटस ऑफ़ नवोदय विद्यालय, पी.एच.डी. एजूकेशन मैसूर यूनिवर्सिटी।

8. अली जब्बाद, 1996 - स्टडी ऑफ़ सेल्फ कान्सेप्ट वाडी इमेज एडजस्टमेन्ट एण्ड परफार्मेन्स ऑफ़ हाकी प्लेयर्स, पी.एच.डी. फिजीकल एजूकेशन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय।

9. उपाध्याय, एस.के.एण्ड विक्रान्त, 2004 - ए स्टडी ऑफ़ इमोशल स्टेबलिटी एण्ड एकेडमिक एचीवमेण्ट ऑफ़ ब्याज एण्ड गल्स एट सैकेण्डरी लेवेल।

10. जेनिफर, एम, 2005, - स्टूडेन्टस सैल्फ कन्सैप्ट रिलेटिड टू एवं एल्टसेटिव हाई स्कूल एक्पीरिएन्स।

11. गुप्ता, एसपी., 2010 - आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन।

Corresponding Author

Salma Khatoon*

Research Scholar, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan